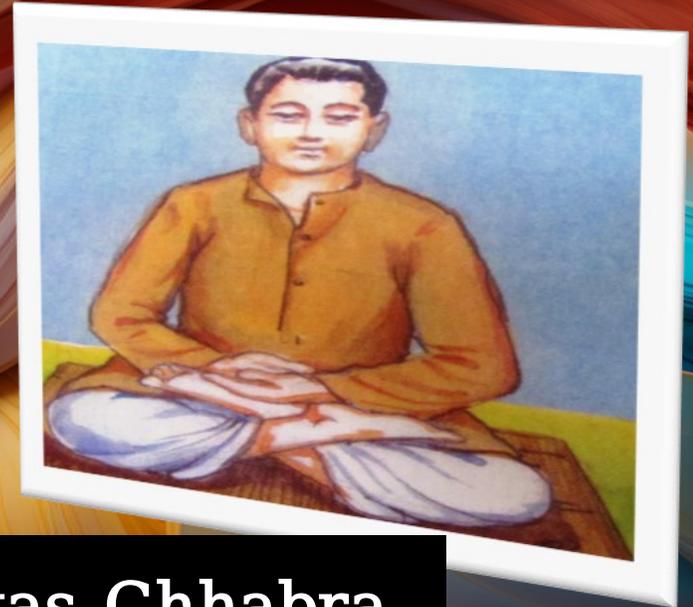


अधिकार 2 क्षायिक सम्यक्त्व



Presentation Developed By: Smt Sarika Vikas Chhabra

अडवस्से उवरिम्मि वि, दुचरिमखंडस्स चरिमफालि त्ति ।
संखातीदगुणक्कम, विसेसहीणक्कमं देदि ॥132॥

- अन्वयार्थ - (अडवस्से उवरिम्मि वि) आठ वर्ष स्थिति करने के बाद भी (दुचरिमखंडस्स) द्विचरम कांडक की (चरिमफालि त्ति) चरमफाली के पतन होने तक (उदयादि अवस्थित गुणश्रेणि आयाम में) (संखातीदगुणक्कम) असंख्यात गुणित क्रम से और (उपरितन स्थिति में) (विसेसहीणक्कमं) विशेषहीनक्रम (चयहीनक्रम) से द्रव्य (देदि) देता है ॥132॥

अपकृष्ट और फाली द्रव्य

अपकृष्ट द्रव्य

जो गुणश्रेणी के लिए द्रव्य
अपकर्षित किया है, वह
अपकृष्ट द्रव्य कहलाता है ।

फाली द्रव्य

स्थितिकांडकघात में जो
प्रत्येक समय में स्थिति का
घात करके द्रव्य आता है,
उसे फाली द्रव्य कहते हैं ।

उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी

सम्यक्त्व की स्थिति 8 वर्ष प्रमाण करने के अनंतर समयों में भी सम्यक्त्व प्रकृति की उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी ही की जाती है ।

जैसे सम्यक्त्व प्रकृति के 8 वर्ष करने के समय एक निषेक उपरितन स्थिति से गुणश्रेणी में लिया था, इसमें असंख्यात गुणे द्रव्य का निक्षेपण किया था और शेष बहुभाग को उपरितन स्थिति में चयहीन क्रम से बांटा था, उसी प्रकार आगे भी प्रत्येक समय में अपकृष्ट द्रव्य और फाली द्रव्य का बंटवारा जानना चाहिए ।

उदयादि गुणश्रेणी में उदय समय से शीर्ष पर्यंत असंख्यातगुणा द्रव्य दिया जाता है । उससे उपरितन स्थिति में विशेषहीन क्रम से द्रव्य दिया जाता है ।

इस प्रकार उदयादि अवस्थित गुणश्रेणी का विधान सम्यक्त्व प्रकृति के द्विचरम कांडक की अंतिम फाली के पतन तक चलता है ।

अडवस्से संपहियं, पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं ।
उवरिं पुण संपहियं, असंखसंखं च भागं तु ॥133॥

- अन्वयार्थ - (अडवस्से संपहियं) सम्यक्त्व प्रकृति की आठ वर्ष स्थिति शेष रखने के समय में (मिश्र व सम्यक्त्व प्रकृति के चरम फाली का द्रव्य) (पुव्विल्लादो असंखसंगुणियं) पूर्व समय संबंधी सम्यक्त्व मोहनीय के सत्त्वद्रव्य से असंख्यातगुणा है।
- उससे (उवरिं पुण संपहियं) आठ वर्ष करने के द्वितीय समय से द्विचरम समय तक (अपकर्षित फालीद्रव्य) (असंख भागं) असंख्यातवाँ भाग है (च) और (अंतिम समय में अपकर्षित फालीद्रव्य) (संखं भागं तु) संख्यातवाँ भाग है ॥133॥

आगे का विषय...

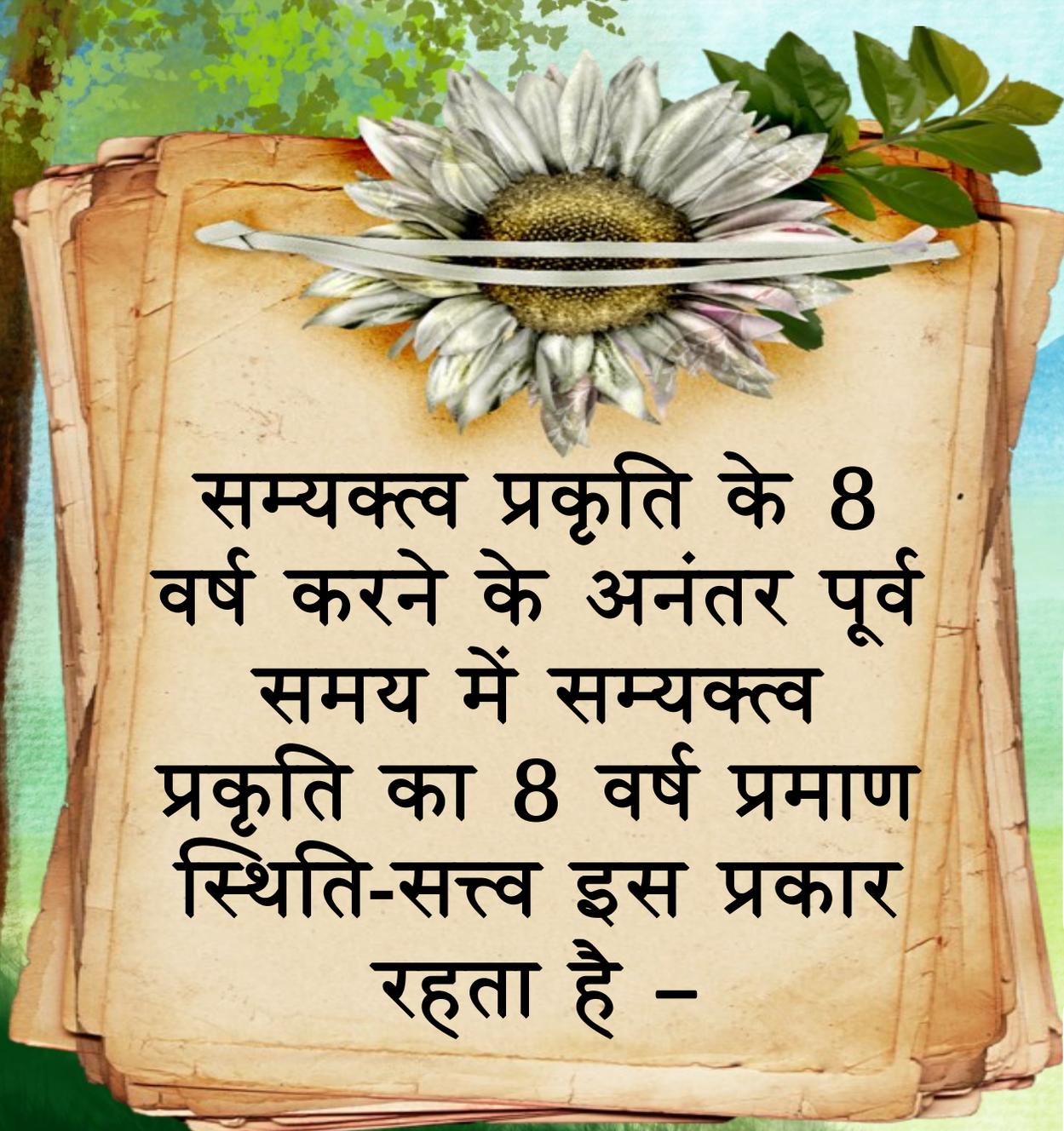
सम्यक्त्व प्रकृति का 8 वर्ष प्रमाण स्थिति-सत्त्व करने के पूर्व इसका स्वस्थान स्थित द्रव्य कितना है, अपकर्षण करके दिया गया द्रव्य कितना है, दोनों को मिलाकर दृश्यमान द्रव्य कितना है - यह दिखाना है।

चूंकि यह द्रव्य; सत्त्व में तीन प्रकार से दिखता है - उदयावली, गुणश्रेणी और उपरितन स्थिति। इसलिये इन तीन स्थानों के द्रव्य के विभाग को बतायेंगे।

इसके पश्चात् 8 वर्ष स्थिति-सत्त्व करने पर कितना द्रव्य दिया गया है - यह बतायेंगे।

इसके पश्चात् 8 वर्ष स्थिति-सत्त्व होने पर अब अपकृष्ट द्रव्य, कांडक द्रव्य कितना दिया जाता है, दृश्यमान द्रव्य कितना होता है — यह बतायेंगे।

फिर कब, कौन-सा अपकृष्ट, कांडक द्रव्य आदि अधिक है, हीन है — यह तुलना की जायेगी, जिससे पूरे सम्यक्त्व द्रव्य के बारे में स्पष्टता हो जाए।



सम्यक्त्व प्रकृति के 8
वर्ष करने के अनंतर पूर्व
समय में सम्यक्त्व
प्रकृति का 8 वर्ष प्रमाण
स्थिति-सत्त्व इस प्रकार
रहता है -

सम्यक्त्व सत्त्व द्रव्य

स ० १२ -
= ७ ख १७ । गु

(यद्यपि गुणसंक्रमण के द्वारा सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य असंख्यात गुणा हो जाता है, तथापि यहाँ उसकी विवक्षा नहीं रखकर सामान्य से सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य पूर्वोक्त प्रमाण लिखा ।)

इसे आगे सर्वत्र 'सम्यक्त्व द्रव्य' लिखेंगे ।

8 वर्ष प्रमाण सत्त्व से पूर्व सत्त्व द्रव्य

चूंकि सम्यक्त्व प्रकृति का 8 वर्ष सत्त्व करने के पूर्व सर्व द्रव्य गुणहानियों में है, इसलिए गुणहानि वाले सूत्रों से प्रथमादि निषेकों में द्रव्य का प्रमाण आता है ।

प्रथम निषेक

$$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\frac{3}{2} \text{ गुणहानि}} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{12}$$

चय

$$= \frac{\text{प्रथम निषेक}}{2 \text{ गुणहानि}} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{12 \times 16}$$

द्वितीय निषेक

$$\begin{aligned} &= \text{प्रथम निषेक} - \text{चय} \\ &= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{12} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{12 \times 16} \\ &= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times 16}{12 \times 16} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{12 \times 16} \\ &= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (16-1)}{12 \times 16} \end{aligned}$$

गुणश्रेणी का अंतिम निषेक

गुणश्रेणी के स्थान पर जो पूर्व सत्त्व है, वहाँ के निषेक का प्रमाण निकाल रहे हैं।

गुणश्रेणी का आयाम अंतर्मुहूर्त है। इसकी संदृष्टि 22 है।

प्रथम निषेक में से (गच्छ - 1) प्रमाण चय घटाने पर गुणश्रेणी का अंतिम निषेक आता है।

गुणश्रेणी का अंतिम निषेक

$$= \text{प्रथम निषेक} - \text{चय} \times (\text{गच्छ} - 1)$$

$$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times 16}{12 \times 16} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (22 - 1)}{12 \times 16}$$

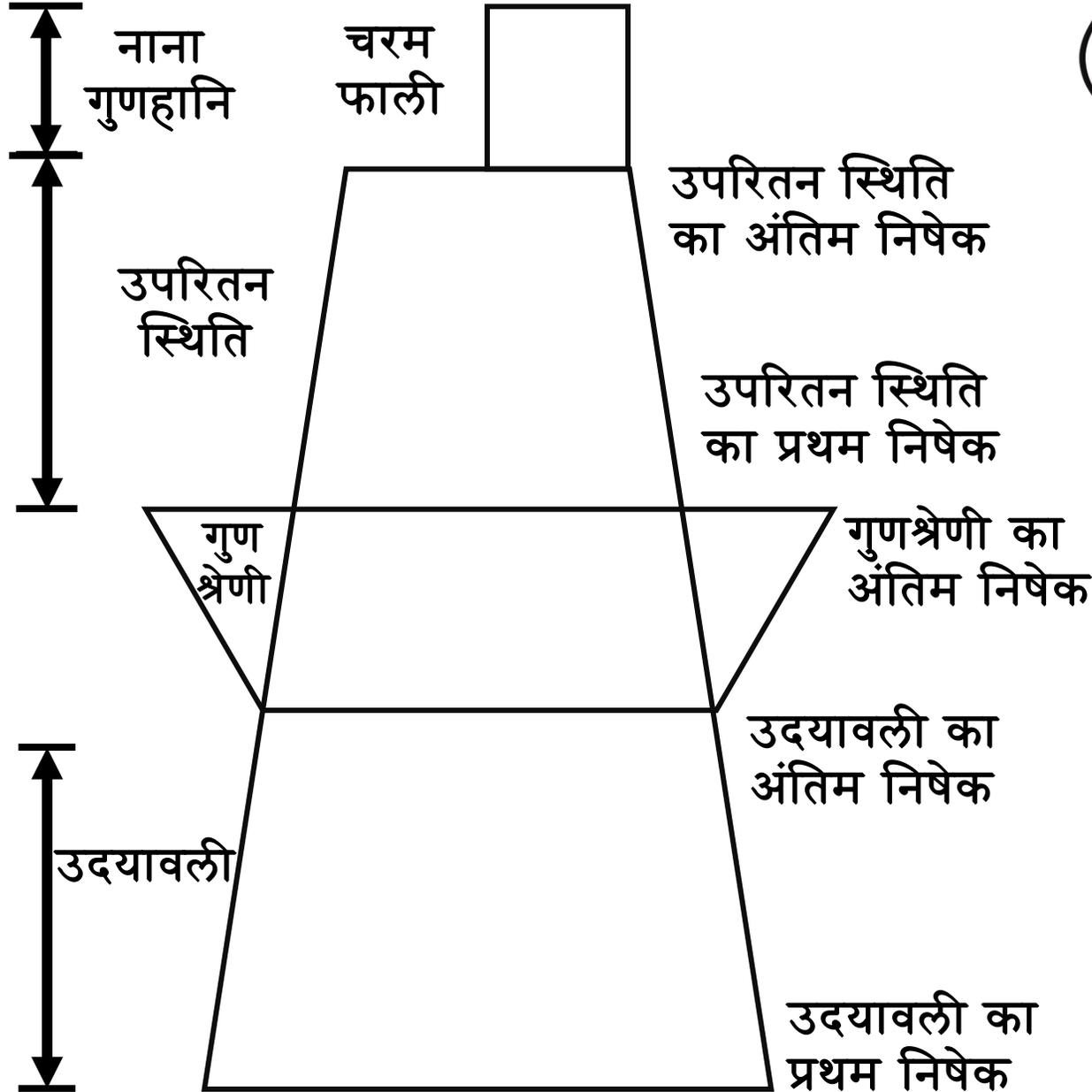
$$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times \{16 - (22 - 1)\}}{12 \times 16}$$

इससे अगला निषेक

$$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (16 - 22)}{12 \times 16}$$

8 वर्ष के सत्त्व का निषेक

$$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times \{16 - (व ८ - 1)\}}{12 \times 16}$$



8 वर्ष प्रमाण
सत्त्व करने से
पूर्व सत्त्व द्रव्य

इस प्रकार यह पूर्व सत्त्वद्रव्य है ।

यद्यपि यहाँ गुणश्रेणी भी दिखाई है । तदपि उस स्थान पर पूर्व सत्त्व द्रव्य चयहीन क्रम से है । वही यहाँ पर स्पष्ट किया है ।

गुणश्रेणी के गुणाकार द्रव्य को अलग से दिखाया जाता है ।



दीयमान द्रव्य का विभाजन

इसके 3 विभाजन करते हैं -

$$\text{अपकृष्ट द्रव्य} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ } \theta}$$

1) उपरितन
स्थिति

$$\bullet \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \mid \left(\frac{प}{\theta} - 1\right)}{\text{ओ प } \theta \theta}$$

2) गुणश्रेणी
द्रव्य

$$\bullet \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \mid \left(\frac{प}{\theta} - 1\right)}{\text{ओ प प } \theta \theta \theta}$$

3) उदयावली
द्रव्य

$$\bullet \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ प प } \theta \theta \theta}$$

उदयावली में द्रव्य का बंटवारा

उदयावली में द्रव्य का
बंटवारा मध्यमधन अदि
सूत्रों से होता है ।

यहाँ गच्छ का प्रमाण
आवली है ।

इसकी संदृष्टि ४ है ।

सूत्र	संदृष्टि
मध्यमधन = $\frac{\text{सर्व द्रव्य}}{\text{गच्छ}}$	$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ प प} \times 8}$ ० ० ०
चय = $\frac{\text{मध्यमधन}}{\text{निषेकहार} - \frac{\text{गच्छ} - 1}{2}}$	$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ प प} \times 8 \mid १६ - \frac{४ - 1}{2}}$ ० ० ०
प्रथम निषेक = चय × निषेकहार	$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ प प} \times 8 \mid १६ - \frac{४ - 1}{2}} \times १६$ ० ० ०
अंतिम निषेक = प्रथम निषेक - (गच्छ - 1) × चय	$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ प प} \times 8 \mid १६ - \frac{४ - 1}{2}} \times १६ - (४ - 1)$ ० ० ०

गुणश्रेणी का द्रव्य

गुणश्रेणी का द्रव्य $\frac{\text{सम्यक्त्वद्रव्य} \mid \binom{प}{०-1}}{\text{ओपप} \mid \begin{matrix} ० & ० & ० \end{matrix}}$ है ।

यहाँ गुणकार में एक कम संख्या को गौण करके $\binom{प}{०}$ का अपवर्तन किया ।

तब गुणश्रेणी द्रव्य की संदृष्टि $\frac{\text{सम्यक्त्वद्रव्य}}{\text{ओप} \mid \begin{matrix} ० & ० \end{matrix}}$ रही ।

इसे गुणश्रेणी में असंख्यात गुणाकार रूप से बांटा ।

प्रथम निषेक

अंतिम निषेक

सम्यक्त्व द्रव्य

$\frac{\text{ओ प}}{\begin{matrix} ० & ० \end{matrix}} \times ८५$

सम्यक्त्व द्रव्य × ६४

$\frac{\text{ओ प}}{\begin{matrix} ० & ० \end{matrix}} \times ८५$

उपरितन स्थिति में द्रव्य

उपरितन स्थिति का द्रव्य $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \mid \left(\frac{प}{०}-1\right)}{\text{ओ प}} \frac{०}{०}$ है ।

यहाँ भी गुणकार में एक कम संख्या को गौण करके $\frac{प}{०}$ का अपवर्तन किया । तब संदृष्टि $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ}} \frac{०}{०}$ हुई ।

इस द्रव्य को गुणश्रेणी के ऊपर स्थित नाना गुणहानियों में चयहीन क्रम से दिया जाता है । प्रथम निषेक में देय द्रव्य डेढ़ गुणहानि का भाग देने से प्राप्त होता है क्योंकि यहाँ गुणहानियों में द्रव्य है ।

उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक में देय द्रव्य

$$= \frac{\text{द्रव्य}}{\frac{3}{2} \text{ गुणहानि}} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times \frac{१२}{०}}$$

चय

$$= \frac{\text{प्रथम निषेक}}{\text{दो गुणहानि}} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{ओ} \times १२ \times १६}$$

8 वर्ष के निषेक में देय द्रव्य

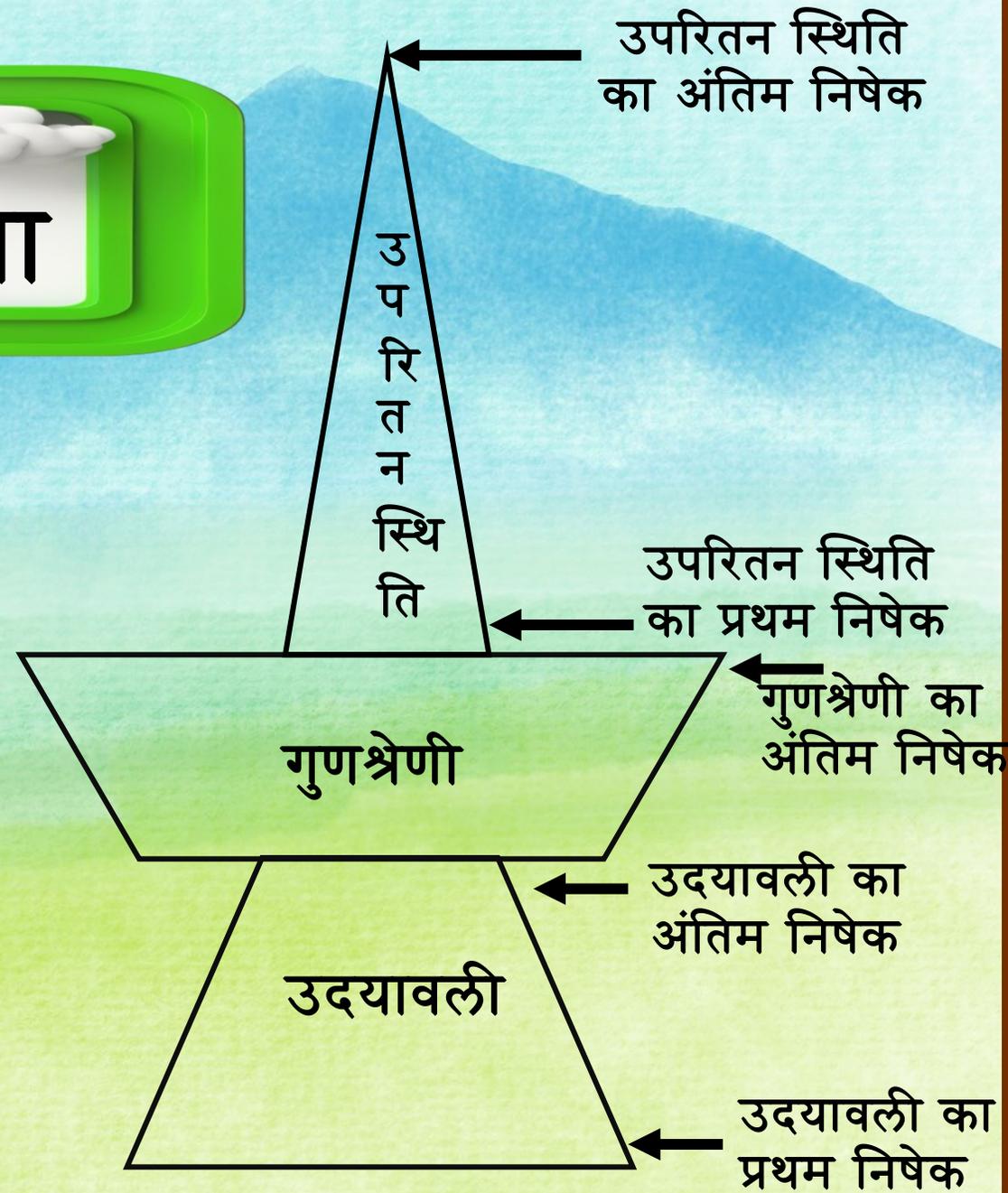
$$\begin{aligned} &= \text{प्रथम निषेक} - \text{चय} \times (8 \text{ वर्ष} - 1) \\ &= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times १६}{\text{ओ} \times १२ \times १६} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (\text{व८} - 1)}{\text{ओ} \times १२ \times १६} \\ &= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times \{१६ - (\text{व८} - 1)\}}{\text{ओ} \times १२ \times १६} \end{aligned}$$

दीयमान द्रव्य की रचना

सत्त्व व अपकर्षण द्रव्य 8 वर्ष स्थिति करने के पूर्व का है, इसलिए इस समय 8 वर्ष से ऊपर की स्थितियों में भी द्रव्य दिया जाता है ।

परंतु हमें यहाँ 8 वर्ष सत्त्व जितना ही तुलना करना है ।

इसलिए नष्ट होने वाली उपरितन स्थिति को नहीं दिखाया है ।





दृश्यमान द्रव्य

पूर्व सत्त्व द्रव्य में जो द्रव्य निक्षिप्त किया गया, उसे जोड़कर जो सत्त्व प्राप्त होता है, उसे दृश्यमान द्रव्य कहते हैं ।

प्रत्येक समय में अपकृष्ट द्रव्य होता है, जो उदयावली से लेकर अतिस्थापनावली प्राप्त होने तक निक्षिप्त होता है, उसे सत्त्व द्रव्य के साथ दृश्यमान द्रव्य कहते हैं ।

यह दृश्यमान द्रव्य भी तीन स्थानों पर दिखाया जाएगा –
उदयावली, गुणश्रेणी, उपरितन स्थिति



उदयावली में दृश्यमान द्रव्य

उदयावली में निक्षिप्त द्रव्य, पूर्व सत्त्व द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग है ।

यहाँ ऋण द्रव्य कुछ भी नहीं है क्योंकि उदयावली के द्रव्य में अपकर्षण नहीं किया जा सकता है ।

इस निक्षिप्त द्रव्य को दिखाने के लिये पूर्व सत्त्व द्रव्य में (+) अधिक की संदृष्टि करें ।

गुणश्रेणी में दृश्यमान द्रव्य

गुणश्रेणी में दिया गया द्रव्य पूर्व द्रव्य से असंख्यात गुणा है ।

प्रश्न – गुणश्रेणी द्रव्य में अपकर्षण भागहार का सद्भाव होने से वह सम्यक्त्व द्रव्य का ही असंख्यातवाँ भाग है । फिर यह द्रव्य पूर्व सत्त्व द्रव्य से असंख्यात गुणा कैसे हुआ ?

- उत्तर – यहाँ जिस $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ से भाग देकर गुणश्रेणी द्रव्य आया है, वह बहुत छोटा होने से गुणश्रेणी का द्रव्य असंख्यात गुणा प्राप्त हो जाता है । यह $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ छोटा क्यों है ? क्योंकि इसमें जिस असंख्यात से भाग दिया है, वह बड़ी राशि है । इसलिए गुणश्रेणी का द्रव्य पूर्व सत्त्व से असंख्यात गुणा होता है ।

चूँकि देय द्रव्य, पूर्व सत्त्व से असंख्यात गुणा है । इसलिये इस देय द्रव्य में '+' की संदृष्टि करें ।

यद्यपि इस गुणश्रेणी में से भी कुछ द्रव्य अपकर्षित होकर अधःस्तन स्थिति में दिया गया है । तथापि वह अत्यल्प होने के कारण और देय द्रव्य के अत्यधिक होने के कारण समायोजित हो गया है ।

उपरितन स्थिति में दृश्यमान द्रव्य

उपरितन स्थिति के निषेकों में दिया गया द्रव्य, पूर्व सत्त्व द्रव्य का असंख्यातवाँ भागमात्र है । सत्त्व द्रव्य में अपकर्षण भागहार का सद्भाव होने से देय द्रव्य सत्त्व द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग होता है ।

उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक में से द्रव्य का अपकर्षण भी हुआ है, जो नीचे की स्थितियों में निक्षिप्त किया जाता है । यह ऋण द्रव्य कहलाता है । नीचे की स्थितियां अंतर्मुहूर्त (संख्यात आवली) प्रमाण है ।

अंतर्मुहूर्त प्रमाण चय द्रव्य; ऋण का प्रमाण है । वह इतना है — $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times 29}{12 \times 16}$

जो देय द्रव्य है, जो कि उपरितन निषेकों से प्रथम निषेक में प्राप्त हुआ है, वह इतना है — $\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times 16}{\text{ओ} \times 12 \times 16}$
०

यह धन द्रव्य कहलाता है ।

(धन द्रव्य – ऋण द्रव्य) करने पर पूर्व सत्त्व में जो द्रव्य मिलना है, वह प्राप्त होता है। उसे सत्त्व द्रव्य में अधिक करने पर दृश्यमान द्रव्य आता है।

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times १६}{\text{ओ} \times १२ \times १६} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times २२}{१२ \times १६}$$

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times १६}{\text{ओ} \times १२ \times १६} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times २२ \times \text{ओ}}{१२ \times १६ \times \text{ओ}}$$

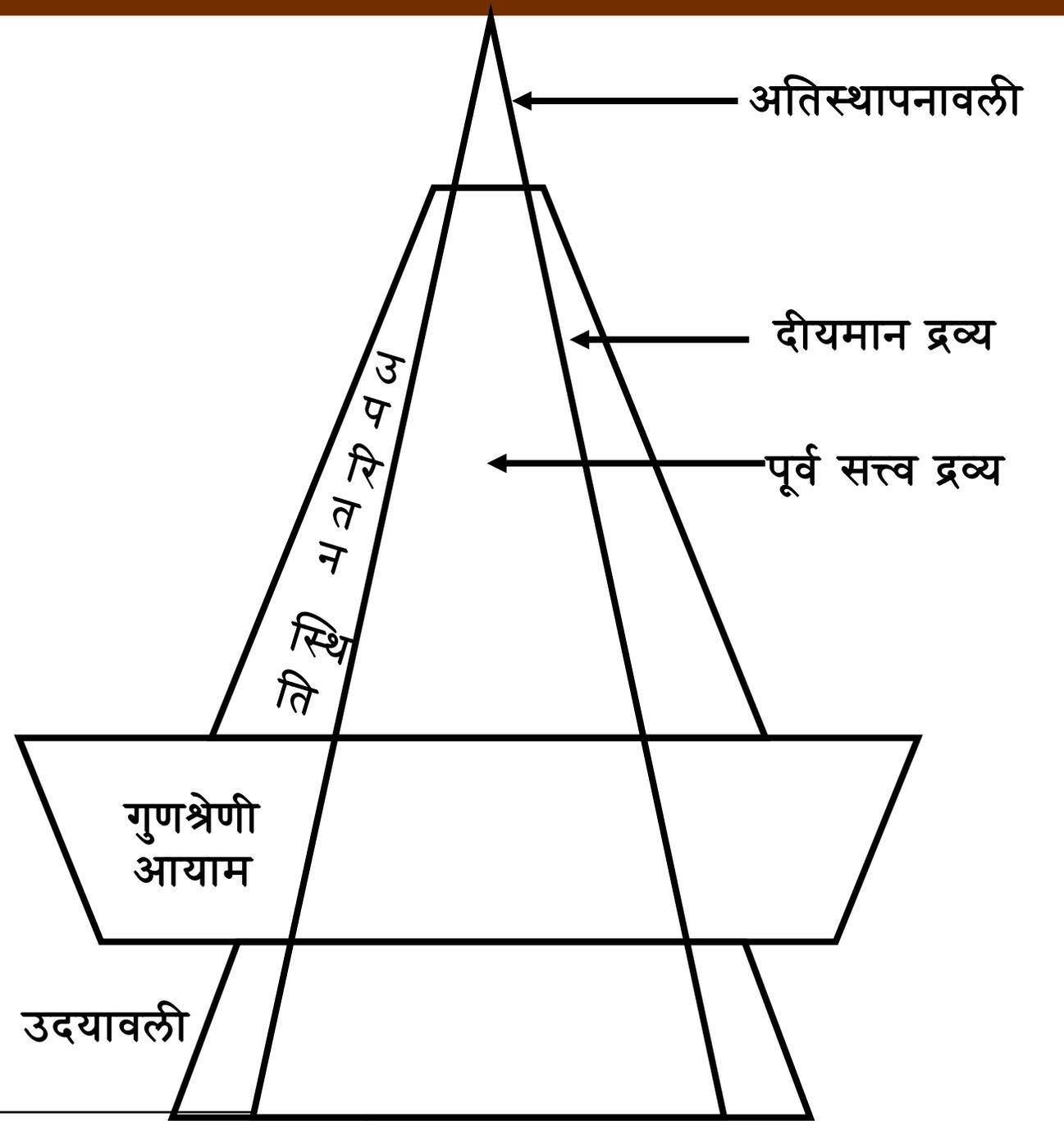
$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times १६ - \text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times २२ \times \frac{\text{ओ}}{\text{ओ}}}{१२ \times १६ \times \frac{\text{ओ}}{\text{ओ}}}$$

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (१६ - २२ \times \frac{\text{ओ}}{\text{ओ}})}{१२ \times १६ \times \frac{\text{ओ}}{\text{ओ}}}$$

यह अधिक द्रव्य पूर्व सत्त्व में मिलाने के लिये '+' की संदृष्टि करें।

इसी प्रकार उपरितन स्थिति के द्वितीयादि निषेकों में ऋण और धन को समायोजित करके '+' की संदृष्टि करें।

8 वर्ष प्रमाण
स्थिति-सत्त्व
करने के पूर्व
सम्यक्त्व
प्रकृति का
दृश्यमान द्रव्य





8 वर्ष
प्रमाण
स्थिति-सत्त्व
के समय
सत्त्व द्रव्य

8 वर्ष प्रमाण स्थिति-सत्त्व करने के समय
सम्यक्त्व प्रकृति का सत्त्व द्रव्य स० १२ –
७ ख १७ । गु
प्रमाण है ।

इसके दृश्यमान, दीयमान द्रव्य का विभाजन
गाथा 128 में कहा है । इसलिए पुनः यहाँ
नहीं कहा है ।

8 वर्ष सत्त्व करने के पश्चात् दीयमान द्रव्य

इसके अगले समय में सम्यक्त्व प्रकृति के सत्त्व द्रव्य में अपकर्षण भागहार से भाग देने पर एक भाग प्रमाण अपकृष्ट द्रव्य का प्रमाण आता है ।

इसे $\frac{\text{पल्य}}{\text{असंख्यात}}$ से भाग देने पर एकभाग प्रमाण द्रव्य; गुणश्रेणी आयाम में असंख्यातगुणा क्रम से दिया जाता है ।

शीर्ष से असंख्यात गुणा द्रव्य अगले निषेक में दिया जाता है क्योंकि यहाँ अवस्थित गुणश्रेणी होती है ।

शेष बहुभाग द्रव्य उपरितन (8 वर्ष – अंत) स्थिति में दिया जाता है । यह द्रव्य मध्यमधन आदि सूत्रों के माध्यम से चयहीन क्रम में अतिस्थापनावली के पूर्व तक दिया जाता है ।

कांडक का फाली-द्रव्य

- उसी समय स्थितिकांडकघात भी प्रवृत्त है । वहाँ कांडक की फाली के द्रव्य का निक्षेपण भी प्रतिसमय होता है । फाली के द्रव्य का प्रमाण इस प्रकार आता है—

$$\text{सम्यक्त्व प्रकृति का द्रव्य} = \frac{\text{स } ०१२ -}{७ \text{ ख } १७}$$

- शेष रहे अनिवृत्तिकरण में संख्यात कांडक होते हैं । अतः वहाँ एक कांडक का द्रव्य सर्व द्रव्य का संख्यातवाँ भाग है ।

$$\text{कांडक द्रव्य} = \frac{\text{स } ०१२ -}{७ \text{ ख } १७ | २}$$

- फाली द्रव्य लाने के लिए अधःप्रवृत्त भागहार का भाग दिया जाता है ।

$$\text{अधःप्रवृत्त भागहार} = \frac{\text{छेद}}{००} \text{ अतः फाली द्रव्य} = \frac{\text{स } ०१२ -}{७ \text{ ख } १७ | २ | \frac{\text{छे}}{००}}$$

- यह फाली द्रव्य अपकृष्ट द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग मात्र है । इसलिए अपकृष्ट द्रव्य में ही अधिक करके इसे निक्षिप्त किया — ऐसा जानना ।

द्वितीयादि फालियों का द्रव्य

इसी प्रकार कांडक के दूसरे, तीसरे आदि समयों से कांडक की द्विचरम फाली तक में भी कांडक द्रव्य का निक्षेपण जानना ।

कांडक की प्रथम फाली से द्विचरम फाली तक का द्रव्य कांडक द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग ही होता है ।

शेष बहुभाग द्रव्य चरमफाली का द्रव्य होता है ।

अंतिम फाली का द्रव्य

इस चरम फाली द्रव्य को दो स्थानों में दिया जाता है - गुणश्रेणी एवं उपरितन स्थिति ।

$\frac{\text{चरम फाली द्रव्य}}{\frac{प}{०}}$ = गुणश्रेणी द्रव्य एवं शेष बहुभाग उपरितन स्थिति का द्रव्य ।

गुणश्रेणी द्रव्य को पूर्ववत् उदय समय से शीर्ष तक प्रत्येक निषेक में असंख्यात गुणित क्रम से निक्षिप्त किया जाता है ।

पूर्व शीर्ष से असंख्यात गुणा उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक में निक्षिप्त किया जाता है ।

उपरितन स्थिति के द्रव्य को शेष स्थिति में चयहीन क्रम से दिया जाता है ।

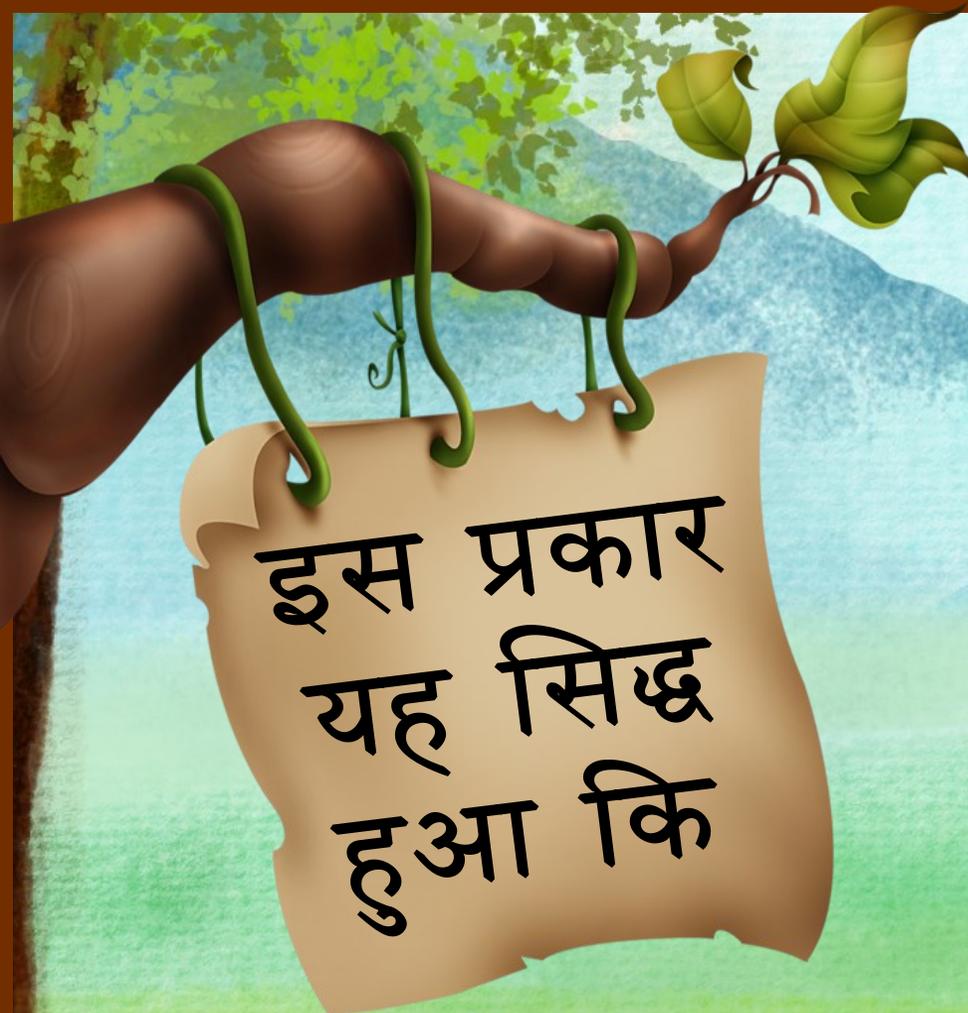
द्रव्य का अल्प-बहुत्व

इस प्रकार 8 वर्ष स्थिति करने के समय में मिश्र और सम्यक्त्व प्रकृति की चरम फाली का द्रव्य इसके पूर्व के सम्यक्त्व के सत्त्व द्रव्य से असंख्यात गुणा है ।

याने $\frac{स० १२ -}{७ ख १७}$ द्रव्य $\frac{स० १२ -}{७ ख १७}$ | $\frac{गु}{०}$ द्रव्य से असंख्यात गुणा है क्योंकि भागहार में $\frac{गु}{०}$ का भाग नहीं है ।

8 वर्ष स्थिति करने के द्वितीय समय से द्विचरम समय तक अपकृष्ट द्रव्य पूर्वोक्त चरम फाली के द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन है । क्योंकि चरम फाली के द्रव्य में अपकर्षण भागहार का भाग देने पर अपकृष्ट द्रव्य प्राप्त होता है । अपकृष्ट द्रव्य = $\frac{स० १२ -}{७ ख १७}$ | ओ

प्रथम कांडक की चरम फाली का द्रव्य; 8 वर्ष करने के समय के द्रव्य का संख्यातवाँ भाग मात्र है । क्योंकि सर्व द्रव्य का संख्यातवाँ भाग एक कांडक द्रव्य का प्रमाण है । अतः यह द्रव्य 8 वर्ष करने के समय के द्रव्य का संख्यातवाँ भाग सिद्ध होता है । (जो प्रथमादि फाली द्रव्य है, वह थोड़ा ही होने से चरम फाली का द्रव्य; संख्यातवाँ भाग बना रहता है ।)



इस प्रकार
यह सिद्ध
हुआ कि

चरम फाली का द्रव्य अर्थात् सम्यक्त्व
प्रकृति की 8 वर्ष स्थिति शेष रखने
के समय में मिश्र व सम्यक्त्व प्रकृति
की चरम फाली का द्रव्य

चरम फाली का द्रव्य पूर्व सत्त्व से
असंख्यात गुणा है।

(8 वर्ष स्थिति-सत्त्व करने के बाद के
कांडक की) प्रथम फाली से द्विचरम फाली
का द्रव्य; चरम फाली के द्रव्य का
असंख्यातवाँ भाग है ।

अंतिम फाली का द्रव्य; चरम फाली के द्रव्य
का संख्यातवाँ भाग है ।

ठिदिखंडाणुक्कीरण-दुचरिमसमओत्ति चरिमसमये च ।
ओक्कट्टिदफालिगद-दव्वाणि णिसिंचदे जम्हा ॥134॥

- अन्वयार्थ - (जम्हा) जिस कारण से (ठिदिखंडाणुक्कीरण-दुचरिमसमओत्ति) स्थितिकाण्डकोत्कीरण काल के द्विचरम समय तक (ओक्कट्टिदफालिगददव्वाणि) अपकर्षित फाली द्रव्य के (असंख्यातवें भाग का) (च) और (चरिमसमये च) चरम समय में (संख्यातवें भाग का) (णिसिंचदे) निक्षेपण करता है उस कारण से पूर्व गाथा में कहा गया अर्थ सिद्ध होता है ॥134॥

कांडक के फाली-द्रव्यों का प्रमाण

सम्यक्त्व प्रकृति के 8 वर्ष करने के द्वितीय समय से कांडक का प्रमाण अंतर्मुहूर्त काल का होता है ।

कांडक की प्रथम फाली से द्विचरमफाली तक का द्रव्य एवं अपकृष्ट द्रव्य सर्व सत्त्व द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग होता है क्योंकि सत्त्व द्रव्य में अपकर्षण भागहार का भाग देकर एक भाग प्रमाण द्रव्य अपकृष्ट और फाली द्रव्य है ।

चरम फाली का द्रव्य सर्व द्रव्य का संख्यातवाँ भाग होता है, क्योंकि एक कांडक का द्रव्य सत्त्व द्रव्य के संख्यातवें भाग प्रमाण है ।

इन्हीं कारणों से 8 वर्ष स्थिति करने के समय में चरम फाली के द्रव्य से पूर्वोक्त दो द्रव्य असंख्यात गुणा हीन एवं संख्यातगुणा हीन हैं ।

अडवस्से संपहियं, गुणसेढिसीसयं असंखगुणं ।
पुव्विल्लादो णियमा, उवारि विसेसाहियं दिस्सं ॥135॥

- अन्वयार्थ - (अडवस्से संपहियं) सम्यक्त्व प्रकृति की स्थिति 8 वर्ष करने के समय में वर्तमान (गुणसेढीसीसयं) गुणश्रेणीशीर्ष का द्रव्य (पुव्विल्लादो) पूर्व गुणश्रेणीशीर्ष के द्रव्य से (णियमा) नियम से (असंखगुणं) असंख्यातगुणा है ।
- (उवारि) उसके पश्चात् गुणश्रेणीशीर्ष का (दिस्सं) दृश्यमान द्रव्य (अपने-अपने पूर्व गुणश्रेणीशीर्ष द्रव्य से) (विसेसाहियं) विशेष अधिक है ॥135॥

नवीन गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य

8 वर्ष सत्त्व करने के प्रथम समय में पूर्व-गुणश्रेणी के अनंतर निषेक में निक्षिप्त द्रव्य यह है -

$$\text{सूत्र: } \frac{\text{मध्यमधन} \times \text{निषेकहार}}{\text{गच्छ} \times \text{निषेकहार} - \frac{\text{गच्छ}-1}{2}} = \frac{\text{स } 0 \ १२ - | १६}{७ \text{ ख } १७ | \text{ व } ८ - | १६ - \frac{\text{व } ८-1}{2}}$$

यह प्रथम निषेक अब गुणश्रेणी में शामिल होता है। यह ही इस समय गुणश्रेणी शीर्ष कहलाता है।

यह गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य पूर्व के गुणश्रेणी शीर्ष द्रव्य से असंख्यात गुणा है। क्योंकि पूर्व गुणश्रेणी

शीर्ष का द्रव्य $\frac{\text{स } 0 \ १२ - | १६ | ६४}{७ \text{ ख } १७ | ० | ८५}$ है।

इस द्रव्य में $\frac{\text{प}}{०}$ का भाग है और प्रथम निषेक के द्रव्य में यह भागहार नहीं होने से वह द्रव्य असंख्यात गुणा सिद्ध होता है।

इसके पश्चात्
द्वितीयादि समयों
में पूर्व गुणश्रेणी
शीर्ष के दृश्य द्रव्य
से वर्तमान
गुणश्रेणी के शीर्ष
का दृश्यमान द्रव्य
साधिक है,
असंख्यात गुणा
नहीं है। वह इस
प्रकार -

8 वर्ष करने के प्रथम समय में उपरितन स्थिति के द्वितीय निषेक को प्राप्त हुआ द्रव्य प्रथम निषेक से एक चयहीन है। उसकी संदृष्टि =
सम्यक्त्व द्रव्य | १६ - 1

$$व८ - | १६ - \frac{व८-1}{2}$$

ऋणरूप एक चय को अलग करके लिख लेते हैं, जिससे यह द्वितीय निषेक प्रथम निषेक जैसा ही हो जाता है।

$$\text{ऋणरूप द्रव्य} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{व८ - | १६ - \frac{व८-1}{2}}$$

$$\text{द्वितीय समय में पूर्व शीर्ष को प्राप्त द्रव्य} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} | ६४}{प | ८५}$$

$$\text{द्वितीय समय में वर्तमान शीर्ष को प्राप्त द्रव्य} = \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} | १६}{व८ - | १६ - \frac{व८-1}{2}}$$

प्रथम, द्वितीय निषेक के द्रव्य की तुलना

द्वितीय निषेक का पूर्व सत्त्व + द्वितीय निषेक को अब प्राप्त द्रव्य

$$\bullet \left(\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | १६}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}} \right) + \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | १६}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}}$$

प्रथम निषेक का पूर्व सत्त्व + प्रथम निषेक को अब प्राप्त द्रव्य

$$\bullet \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | १६}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}} + \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | ६४}}{\text{प | ८५}}$$

अब इन दोनों द्रव्य की तुलना की जाये, तो द्वितीय निषेक का द्रव्य इतना अधिक है -

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | १६}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}} - \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | ६४}}{\text{प | ८५}}$$

$$= \frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य | ०}}{\text{व ८- | १६- } \frac{\text{व ८-1}}{2}}$$

यह द्रव्य पूर्व गुणश्रेणी शीर्ष से कुछ ही अधिक है, असंख्यात गुणा नहीं है ।

इसलिये गाथा में कहा है कि 8 वर्ष स्थिति करने के प्रथम समय में शीर्ष द्रव्य पूर्व शीर्ष द्रव्य से असंख्यात गुणा होता है ।

इसके बाद द्वितीयादि समयों में शीर्ष द्रव्य पूर्व शीर्ष द्रव्य से कुछ अधिक ही होता है, असंख्यात गुणा नहीं ।

ध्यान रहे -

इस प्रकार शीर्ष का द्रव्य साधिक होने का नियम 8 वर्ष स्थिति बनने पर ही हो पाता है ।

क्योंकि सत्त्व का सर्व द्रव्य 8 वर्ष स्थिति में निक्षेपण कर देने से प्रत्येक निषेक का द्रव्य पहले से ही काफी है ।

इसलिए गुणश्रेणी का द्रव्य दे देने पर भी उसमें असंख्यात गुणापना प्राप्त नहीं होता ।

असंख्यातवाँ भाग अधिक मात्र द्रव्य दिया जाता है ।



प्रश्न - तो
फिर यहाँ
गुणश्रेणी
नहीं है ?

उत्तर — नहीं, गुणश्रेणी तो है ही ।

क्योंकि अपकर्षण किये द्रव्य को गुणश्रेणी आयाम में असंख्यात गुणा क्रम से बांट रहे हैं । वह क्रम अभी भी वर्तमान है ।

तथा अनंतर निषेक में भी दिया गया द्रव्य पूर्व निषेक से असंख्यात गुणा है ।

इसी प्रकार तृतीय आदि समयों में गुणश्रेणी शीर्ष का द्रव्य कुछ अधिक जानना ।

अडवस्से य ठिदीदो, चरिमेदरफालिपडिददव्वं खु।
संखासंखगुणूणं, तेणुवरिमदिस्समाणमहियं सीसे ॥136॥

- अन्वयार्थ - (अडवस्से य ठिदीदो) सम्यक्त्व प्रकृति की 8 वर्ष प्रमाण स्थिति रहने से लेकर (चरिमेदरफालिपडिददव्वं खु संखासंखगुणूणं) चरमफाली का द्रव्य संख्यातगुणा हीन और अन्य फालियों का पतित द्रव्य असंख्यातगुणा हीन है।
- (तेण) उससे (उवरिमदिस्समाणं सीसे अहियं) उपरितन गुणश्रेणिशीर्ष का द्रव्य विशेष अधिक है ॥136॥

कांडक का द्रव्य

अपकर्षण द्रव्य के अतिरिक्त कांडक द्रव्य भी यहाँ पतित होता है । उसके कारण गुणश्रेणी शीर्ष; पूर्व के शीर्ष से गुणाकाररूप हो सकता है – ऐसी आशंका होने पर यहाँ कांडक का द्रव्य कितना प्राप्त होता है – यह कहते हैं –

8 वर्ष स्थिति करने के समय से जो कांडक प्रवृत्त होता है, उसमें प्रथम फाली से द्विचरम फाली तक शीर्ष में पूर्व सत्त्व द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग प्राप्त होता है । तथा अंतिम फाली में पूर्व सत्त्व द्रव्य का संख्यातवाँ भाग प्राप्त होता है ।

प्रथम से द्विचरम फाली का द्रव्य चूंकि सत्त्व द्रव्य का असंख्यातवाँ भाग है । इसलिये उसे अधस्तन निषेकों में निक्षेपण करने पर वह असंख्यातवाँ भाग ही अधिक होता है ।

कांडक का द्रव्य

अंतिम फाली का द्रव्य सत्त्व द्रव्य का संख्यातवाँ भाग है । क्योंकि कांडक का आयाम अंतर्मुहूर्त है । यह कुल स्थिति-सत्त्व का संख्यातवाँ भाग है । इसलिये इस संख्यातवें भाग द्रव्य को अधस्तन स्थितियों में देने पर सत्त्व द्रव्य से संख्यातवाँ भाग अधिक ही प्राप्त होता है ।

इस प्रकार सारे कांडकघात की फालियों में उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक को प्राप्त द्रव्य पूर्व द्रव्य से संख्यात या असंख्यात भाग अधिक ही है, असंख्यात गुणा नहीं है । इसलिये पूर्व गाथा में कहा गया अर्थ सुसंगत है ।

जदि गोउच्छ्विसेसं, रिणं हवे तो वि धणपमाणादो ।
जम्हा असंखगुणूणं, ण गणिज्जदि तं तदो एत्थ ॥137॥

- अन्वयार्थ - (जदि) यद्यपि (अधस्तन गुणश्रेणिशीर्ष से उपरितन गुणश्रेणिशीर्ष में) (गोउच्छ्विसेसं) गोपुच्छ चय (रिणं) ऋण (हवे) है (तो वि) फिर भी (धणपमाणादो) धनप्रमाण से (दिये जाने वाले द्रव्य से) (जम्हा) जिस कारण से (असंखगुणूणं) असंख्यातगुणा कम है (तदो) उस कारण से (एत्थ) यहाँ (तं) उसको (ण गणिज्जदि) गिनते नहीं हैं ॥137॥

प्रश्न - 8 वर्ष करने के प्रथम समय में उपरितन स्थिति के प्रथम निषेक में दिये गये द्रव्य से द्वितीय निषेक का द्रव्य चयहीन है । तब अगले समय में इस द्वितीय निषेक का द्रव्य अधिक कैसे हो सकता है ?

उत्तर - यद्यपि प्रथम निषेक से द्वितीय निषेक में एक चयहीन द्रव्य है, तथापि यह चय द्रव्य, वर्तमान में इस द्वितीय निषेक को प्राप्त अपकृष्ट द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन द्रव्य है ।

इसलिये इस हीन राशि को ना गिनकर या उसे इस आगत धन राशि में से समायोजित कर यह देखा जाता है कि शीर्ष का दृश्य द्रव्य पूर्व शीर्ष से अधिक होता है ।

गोपुच्छ
क्यों कहते
हैं?



क्रम से निषेक द्रव्य में हानि होती है – इसलिये इसे गोपुच्छ कहते हैं। (गाय की पूंछ के समान)

जब तक एक प्रकार से प्रवृत्त है, तब तक उसे गोपुच्छ विशेष (चय) कहते हैं।

तत्तक्काले दिस्सं, वज्जिय गुणसेढिसीसयं एक्कं ।
उवरिमठिदीसु वट्टदि, विसेसहीणक्कमेणेव ॥138॥

- अन्वयार्थ - (तत्तक्काले) उस-उस काल में (एक्कं गुणसेढिसीसयं वज्जिय) एक गुणश्रेणिशीर्ष को छोड़कर (उवरिमठिदीसु) उपरितन स्थितियों में (दिस्सं) दृश्यमान द्रव्य (विसेसहीणक्कमेणेव) विशेष (चय) हीनक्रम से (वट्टदि) प्रवर्तमान होता है ॥138॥

शेष कांडकों का विधान

इस प्रकार प्रत्येक समय में उपरितन स्थिति का प्रथम निषेक गुणश्रेणी शीर्ष होता है ।

इसके अनंतर द्वितीय निषेक से उपरितन सर्व निषेकों में दृश्य द्रव्य चयहीन क्रम से दिखाई देता है ।

यह प्रथम कांडक में अपकृष्ट द्रव्य और फाली द्रव्य के निक्षेपण का एवं दृश्य द्रव्य का विधान कहा ।

इसी प्रकार 8 वर्ष स्थिति करने के द्वितीय कांडक से द्विचरमकांडक की अंतिम फाली तक अपकृष्ट द्रव्य और फाली द्रव्य के निक्षेपण का विधान जानना चाहिए ।

गुणसेढिसंखभागा, तत्तो संखगुण उवरिमठिदीओ ।
सम्मत्तचरिमखंडो, दुचरिमखंडादु संखगुणो ॥139॥

- अन्वयार्थ- (गुणसेढिसंखभागा) गुणश्रेणि का संख्यात बहुभाग और (तत्तो संखगुण उवरिमठिदीओ) उससे संख्यातगुणित उपरितन स्थिति – इन दोनों के काल-प्रमाण स्थिति (सम्मत्तचरिमखंडो) सम्यक्त्व प्रकृति का चरम कांडकघात करने के लिए ग्रहण करता है।
- उस चरम कांडक का प्रमाण (दुचरिमखंडादु संखगुणो) द्विचरम कांडक से संख्यातगुणा है ॥139॥

चरम कांडक

द्विचरमकांडक तक अवस्थित गुणश्रेणी होती है । चरम कांडक से पुनः गलितावशेष गुणश्रेणी होती है ।

अंतिम कांडकोत्कीरण का काल अनिवृत्तिकरण का शेष काल है । अंतिम कांडक समाप्त होने पर अनिवृत्तिकरण भी समाप्त हो जाता है ।

इस अंतिम कांडक का प्रमाण जो अवस्थित गुणश्रेणी थी, उसका संख्यात बहुभाग तथा उपरितन शेष रही सर्व स्थिति है । जो अवस्थित गुणश्रेणी का संख्यात बहुभाग का प्रमाण है, उससे शेष रही उपरितन स्थिति संख्यात गुणी है ।

चरम कांडक का आयाम = अवस्थित गुणश्रेणी का संख्यात बहुभाग + शेष रही उपरितन स्थिति

कांडक आयाम के अतिरिक्त नीचे कितनी स्थिति शेष रखी ?

कांडकोत्कीरण का काल जो कि अनिवृत्तिकरण का अंतिम अंतर्मुहूर्त है + जो प्रथम गलितावशेष गुणश्रेणी बनाई थी, उसमें अनिवृत्तिकरण का संख्यातवाँ भाग अधिक लिया था। उसका संख्यात बहुभाग — इतनी स्थिति शेष रखी है।

शेष स्थिति = अंतिम कांडकोत्कीरण का काल + $\frac{\text{अनिवृत्तिकरण}}{\text{संख्यात}}$ का बहुभाग

यह दोनों काल मिलकर अंतर्मुहूर्त प्रमाण है।

यह शेष रहा काल अवस्थित गुणश्रेणी का संख्यातवाँ भाग है।

यह शेष रहा काल ही वर्तमान में बनी नवीन उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी का आयाम भी है। इन निषेकों में गुणाकाररूप से अपकृष्ट द्रव्य दिया जाता है।

कृतकृत्यवेदक

अंतिम कांडक का आयाम एक-एक फाली करके द्विचरम फाली तक कुछ नष्ट होता है ।

चरम फाली में कांडक का सारा द्रव्य शेष रखी नीचे की स्थिति में निक्षिप्त होता है ।

इस प्रकार अंतिम कांडक के नष्ट होने पर जीव कृतकृत्यवेदक हो जाता है ।

अनिवृत्तिकरण के पश्चात् का शेष रखा काल कृतकृत्यवेदक काल कहलाता है । यह भी अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ।

सम्यक्त्व
प्रकृति के
अंतिम स्थिति
काण्डकायाम
की रचना

उपरितन स्थिति

अंतिम स्थितिकाण्डकायाम

अवस्थित गुणश्रेणी शीर्ष

अवस्थित गुणश्रेणी
का संख्यात बहुभाग भाग

अवस्थित गुणश्रेणी
का संख्यातवाँ भाग

1. पूर्व गलितावशेष गुणश्रेणी शीर्ष का संख्यातवाँ एक भाग
2. कृतकृत्यवेदक काल
3. नवीन गलितावशेष गुणश्रेणी शीर्ष का संख्यात बहुभाग

1. अवशिष्ट अनिवृत्तिकरण काल
2. अंतिम कांडकोत्कीरण काल

सम्मत्तचरिमखंडे, दुचरिमफालि ति तिणि पव्वाओ।
संपहियपुव्वगुणसेढीणं सीसे य चरिमे य ॥140॥

- अन्वयार्थ - (सम्मत्तचरिमखंडे) सम्यक्त्व प्रकृति के अंतिम स्थितिकाण्डक के (दुचरिमफालि ति) द्विचरमफाली तक दीयमान द्रव्य के (तिणि पव्वाओ) तीन पर्व हैं - (संपहियपुव्वगुणसेढीणं सीसे य) (1) वर्तमान समय के गुणश्रेणिशीर्ष तक (2) पूर्व गुणश्रेणिशीर्ष तक और (चरिमे य) (3) उपरितन स्थिति के अंतिम निषेक तक ॥140॥

अंतिम कांडक के द्रव्य हेतु 3 पर्व

परंतु प्रथम फाली से लेकर द्विचरम फाली तक फाली का द्रव्य मात्र प्रथम पर्व में ही दिया जाता है ।

अपकृष्ट द्रव्य देने के लिए 3 स्थान हैं । उन्हें 3 पर्व कहते हैं । ये 3 पर्व हैं-

1) सांप्रतिक गुणश्रेणी

- उदय समय से लेकर शेष रखी हुई स्थिति प्रमाण जो गुणश्रेणी का आयाम है, वह प्रथम पर्व है ।

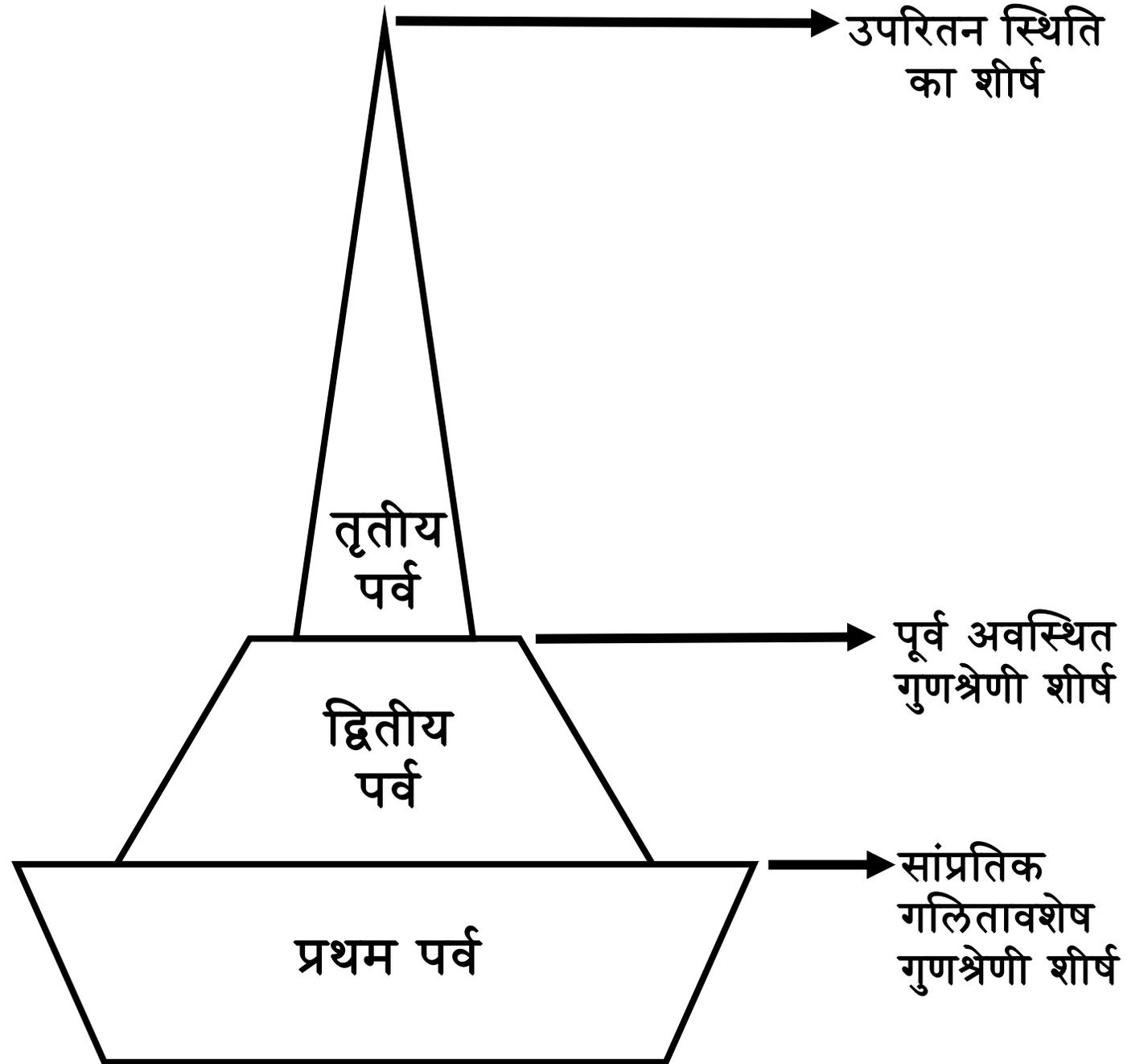
2) पूर्व अवस्थित गुणश्रेणी शीर्ष

- प्रथम पर्व के अगले निषेक से लेकर पूर्व अवस्थित गुणश्रेणी के शीर्ष तक का आयाम द्वितीय पर्व है ।
- इसका काल प्रथम पर्व से संख्यात गुणा है ।

3) उपरितन स्थिति

- पूर्व अवस्थित गुणश्रेणी शीर्ष से ऊपर जो स्थिति है वह सारी उपरितन स्थिति है । यह तीसरा पर्व है ।
- इसका काल दूसरे पर्व से संख्यात गुणा है ।

सम्यक्त्व
प्रकृति के
अंतिम
काण्डक की
द्विचरम फाली
तक दीयमान
द्रव्य के तीन
पर्वों की
रचना



तत्थ असंखेज्जगुणं, असंखगुणहीणयं विसेसूणं ।
संखातीदगुणूणं, विसेसहीणं च दत्तिकमो ॥141॥
ओक्कट्टिदबहुभागे, पढमे सेसेक्कभागबहुभागे ।
विदिये पव्वे वि सेसिगिभागं तदिये जदो देदि ॥142॥

- अन्वयार्थ- (तत्थ) वहाँ से (उदयादि गुणश्रेणिरूप प्रथम पर्व में) (असंखेज्जगुणं) असंख्यातगुणितरूप से, (द्वितीय पर्व के प्रथम निषेक में) (असंखगुणहीणयं) असंख्यातगुणा हीन, (पुनः द्वितीयादि निषेकों से लेकर अन्तिम निषेक पर्यन्त) (विसेसूणं) विशेषहीन क्रम से, उसके पश्चात् तृतीय पर्व के प्रथम निषेक में (संखातीदगुणूणं) असंख्यातगुणाहीन (च) और द्वितीयादि निषेकों में (विसेसहीणं) विशेषहीन रूप से (दत्तिकमो) देने का क्रम है।
- (जदो) क्योंकि (पढमे) प्रथम पर्व में (ओक्कट्टिदबहुभागे) अपकर्षित द्रव्य का बहुभाग देता है। (विदिये पव्वे वि) दूसरे पर्व में (सेसेक्क भागबहुभागे) शेष रहे एक भाग का बहुभाग और (तदिये) तृतीय पर्व में (सेसिगिभागं) शेष रहा एक भाग (देदि) देता है ॥141-142॥

अपकृष्ट द्रव्य को इन तीन पर्वों में इस प्रकार दिया जाता है -

	प्रथम पर्व	द्वितीय पर्व	तृतीय पर्व
कितना द्रव्य?	अपकृष्ट द्रव्य का असंख्यात बहुभाग	अपकृष्ट द्रव्य के एक भाग का असंख्यात बहुभाग	अपकृष्ट द्रव्य का शेष रहा एक भाग
किस क्रम से?	प्रथम निषेक से अंतिम निषेक तक असंख्यात गुणित क्रम से	प्रथम निषेक से अंतिम निषेक तक चयहीन क्रम से	प्रथम निषेक से अतिस्थापनावली छोड़कर शेष स्थिति में चयहीन क्रम से
किस विधान से?	प्रक्षेप विधि से	मध्यमधन आदि सूत्रों के द्वारा	मध्यमधन आदि सूत्रों के द्वारा

ऐसा देने पर इनके दीयमान द्रव्य का अल्पबहुत्व इस प्रकार होता है -

1) प्रथम पर्व के अंतिम निषेक से द्वितीय पर्व के प्रथम निषेक में असंख्यात गुणा हीन द्रव्य प्राप्त होता है । क्योंकि

(अ) कुल देय द्रव्य, पूर्व पर्व में देय द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन है ।

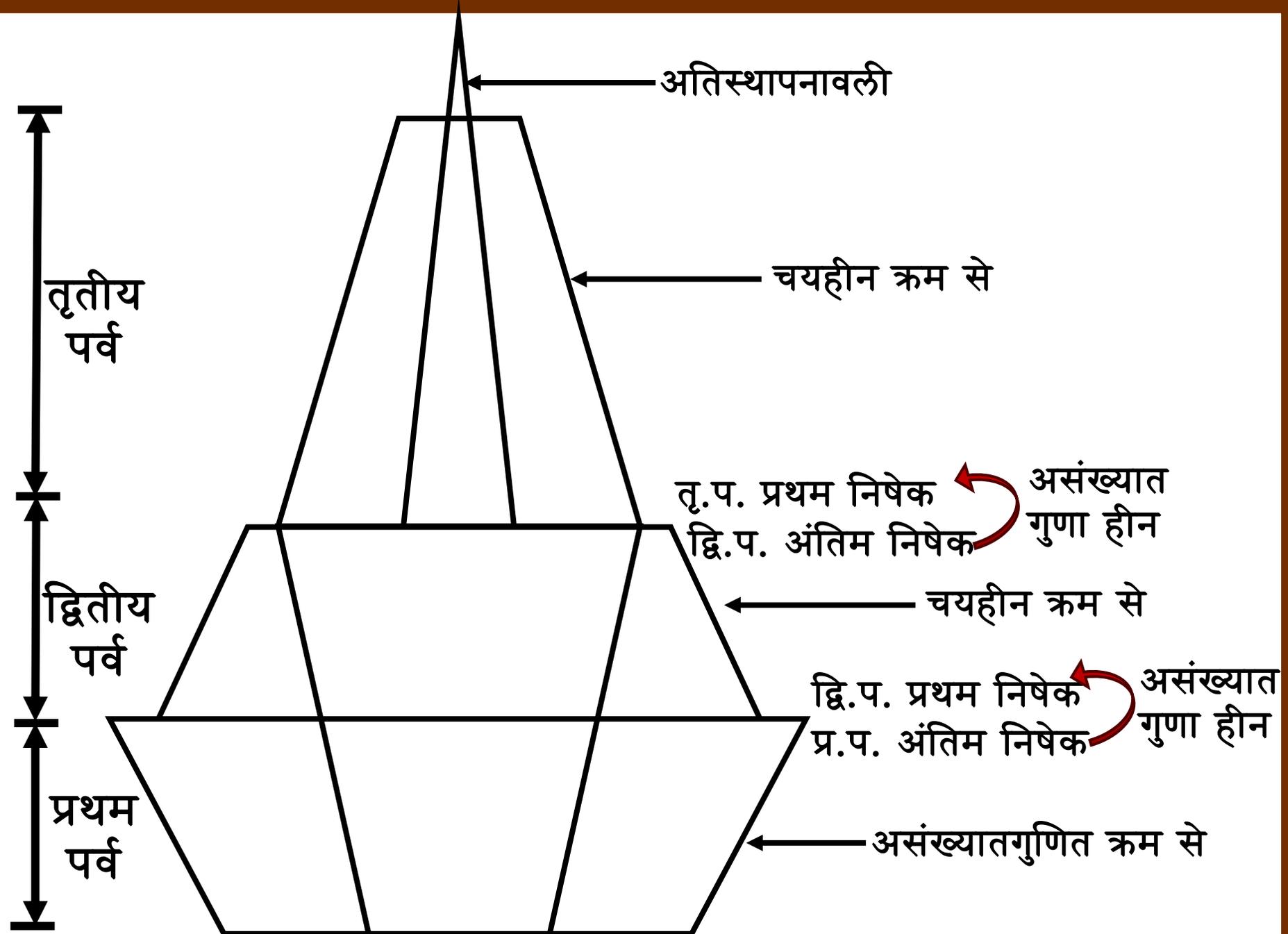
(ब) द्वितीय पर्व का आयाम प्रथम पर्व के आयाम से संख्यात गुणा बड़ा है ।

2) द्वितीय पर्व के अंतिम निषेक से तृतीय पर्व के प्रथम निषेक में असंख्यात गुणा हीन द्रव्य प्राप्त होता है । क्योंकि

(अ) कुल देय द्रव्य, पूर्व पर्व में देय द्रव्य से असंख्यात गुणा हीन है ।

(ब) तृतीय पर्व का आयाम द्वितीय पर्व के आयाम से संख्यात गुणा बड़ा है ।

सम्यक्त्व
प्रकृति के
अंतिम
कांडक की
द्विचरम
फाली तक
तीन पर्वों
में द्रव्य
देने की
रचना



उदयादिगलिदसेसा, चरिमे खंडे हवेज्ज गुणसेढी ।
पाडेदि चरिमफालिं, अणियट्टीकरणचरिमम्हि ॥143॥

- अन्वयार्थ - (चरिमे खंडे) सम्यक्त्व प्रकृति के अंतिम स्थितिकांडक में (उदयादिगलिदसेसा) उदयादि गलितावशेष (गुणसेढी) गुणश्रेणि (हवेज्ज) होती है।
- (अणियट्टीकरणचरिमम्हि) अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय में (चरिमफालिं) अंतिम फाली का (पाडेदि) पतन करता है
॥143॥

अंतिम कांडक की फाली के पतन का काल

इस प्रकार सम्यक्त्व प्रकृति के अंतिम कांडक में उदयादि गलितावशेष गुणश्रेणी होती है । यह चरमकांडक के अंतिम समय तक प्रवर्तती है ।

अंतिम कांडक की समाप्ति के साथ ही अनिवृत्तिकरण भी समाप्त होगा ।

अनिवृत्तिकरण के अंतिम समय में अंतिम कांडक की फाली का पतन होगा ।

चरिमं फालिं देदि हु, पढमे पव्वे असंखगुणियकमे ।
अंतिमसमयम्हि पुणो, पल्लासंखेज्जमूलाणि ॥144॥

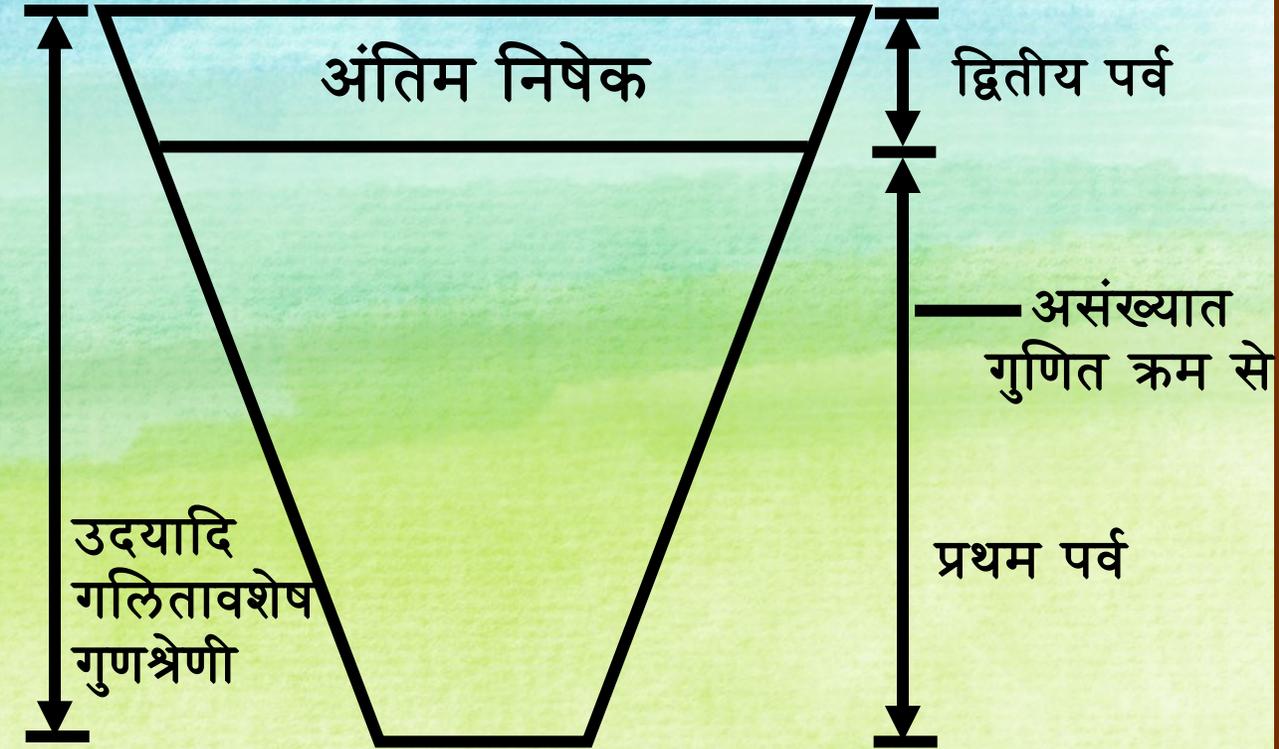
- अन्वयार्थ - (चरिमं फालिं) अंतिम काण्डक की अंतिम फाली का द्रव्य (पढमे पव्वे) प्रथम पर्व में (असंखगुणियकमे) असंख्यातगुणित क्रम से (देदि) देता है।
- (हु पुणो) पुनः (अंतिमसमयम्हि) अंतिम समय में (पल्लासंखेज्जमूलाणि) पल्य के असंख्यात वर्गमूलप्रमाण देता है
॥144॥

सम्यक्त्व प्रकृति के अंतिम कांडक की अंतिम फाली का निक्षेप क्रम

सम्यक्त्व प्रकृति के अंतिम कांडक की अंतिम फाली का द्रव्य गलितावशेष गुणश्रेणी आयाम में असंख्यात गुणित क्रम से दिया जाता है ।

उदय समय से लेकर द्विचरम निषेक तक एक पर्व कहलाता है । अंतिम निषेक द्वितीय पर्व कहलाता है ।

वहाँ द्वितीय पर्व में बहुभाग द्रव्य दिया जाता है । प्रथम पर्व में एक भाग द्रव्य दिया जाता है ।



अंतिम कांडक की अंतिम फाली का द्रव्य

यहाँ शेष रहा सम्यक्त्व द्रव्य = $\frac{स० १२-७ ख १७}{७ ख १७}$

क्योंकि अधःगलन निषेक एवं गलितावशेष आयाम के निषेकों को छोड़कर अभी भी बहुभाग द्रव्य उपरितन स्थिति में है, जिसका घात इस अंतिम फाली में किया जा रहा है।

सम्यक्त्व द्रव्य

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य}}{मू०}$$

प्रथम पर्व में देय द्रव्य

$$\frac{\text{सम्यक्त्व द्रव्य} \times (मू० - 1)}{मू०}$$

द्वितीय पर्व में देय द्रव्य

यहाँ (पल्य का प्रथम वर्गमूल \times असंख्यात) भागहार है।

यह प्रथम पर्व का देय द्रव्य; उदय निषेक में स्तोक, उससे असंख्यात गुणा द्वितीय निषेक में, ऐसे उत्तरोत्तर द्विचरम निषेक तक दिया जाता है।

द्वितीय पर्व में देय द्रव्य एक निषेक में ही दिया जाना है। सो वह पूरा ही वहाँ निक्षिप्त किया जाता है।

➤ Reference : श्री लब्धिसार टीकासहित अनुवाद – ब्र. सुजाता रोटे, बाहुबली (वर्तमान में आर्यिका श्री शुद्धोहंश्री माताजी)

➤ For updates / feedback / suggestions, please contact

➤ Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com

➤ www.jainkosh.org

➤ ☎: 94066-82889

• इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं लब्धिसार की प्लेलिस्ट चुनें ।